देखो। माँझे का जोड़ा[31] पहनकर मुझे दिखाने आए थे। मैंने हाथ पकड़कर बैठा लिया। वह दिन, और आज का दिन। चालीस बरस हो गए, यहीं हैं।

मिरज़ाः वाह! कहो तो पकड़ लाऊँ उसी ज़माने का एक आशिक़। हम्म्म? सर पर बाल नहीं हैं। मुँह में दाँत नहीं हैं। लेकिन है पूरे चालीस गाँव की जागीर। और नाम है नवाब जाफ़र।

उमरावः एक परचा पहुँचा दो।

मिरज़ाः किसे? नवाब जाफ़र को?

उमरावः हम्म्म! उन्हें।

****

(मिरज़ा नवाब के पास जाकर उनको ख़त देता है। उमराव का ख़त है। उसमें लिखा है, "तू मुझे चाहे न चाहे, यह तेरे बस में तो है। और मैं तुझको न चाहूँ, यह मेरे बस में नहीं।")

नवाबः जवाब लेते जाइए। *(वह लिखते है,)* "तुम्हारे शेर ने उस आग को जो दबी हुई थी, कुरेद कर भड़का दिया है। बस अपनी वज़ा[32] से मज़बूर हैं। तुम्हारे कोठे पर अब हरगिज़ न आएँगे। नवाबगंज में हमारे दोस्त बन्ने साहब रहते हैं। फ़ुरसत मिले तो आज शाम को चली आना।"

(शाम को उन दोनों की मुलाकात होती है। फिर दूसरे दृश्य में उमराव नवाब बन्ने साहब के घर में नवाब सुलतान की राह देख रही होती है।)

****

औरतः आदाब! नवाब साहब देर से आएँगे। आपको बीवी बुला रही हैं।

उमरावः कौन? नवाब बन्ने साहब की बेगम?

औरतः जी हाँ।

उमरावः तसलीम।

बेगमः आदाब! तशरीफ़ रखिए। ये तो सुबह से ही नवाब सुल्तान के मकान पर गए हुए हैं। अभी तक आए नहीं। शायद उनकी माँ की तबीयत ज़्यादा ख़राब है।

बुढ़ियाः बेगम, यह कौन है?

बेगमः तुम्हें क्या?

बुढ़ियाः जैसे मैं जानती ही नहीं। भला इन्हें कौन नहीं जानता है?

उमरावः जानती हो तो पूछना क्या?

बुढ़ियाः उई बी, तुमसे कौन बात कर रहा है? मैं तो अपनी बेगम से पूछ रही थी। भला मेरा मुँह कहाँ है तुमसे बात करने लायक़? तुम बड़ी आदमी हो।

बेगमः लड्डन की माँ, अपना गँवारपन दिखाना हो तो बड़ी बेगम के पास जाओ। यहाँ मत बैठो।

बुढ़ियाः हाँ, ठीक फ़रमा रही हैं। जब इन जैसी बैठें तो भला मेरी क्या ज़रूरत है?

बेगमः तुम जाती हो कि उठाऊँ जूती?

---

[31] yellow clothes worn by the bride and the groom a few days before the wedding ceremony

[32] nature, state, elegance.

उमरावः बेगम, जाने दीजिए। मुई बेतुकी है।
बुढ़ियाः अरे! तू कुछ न बोल रंडी। नहीं तो तेरे झोंटे पकड़कर गला दबा दूँगी, हाँ।
(बेगम जूता उठाकर बुढ़िया को मारने लगती है।)
बेगमः कमीनी, बदज़ात।
उमरावः जाने दीजिए बीबी जी, बेचारी बूढ़ी है।
बुढ़ियाः बचाओ! बचाओ!
बड़ी बेगमः क्या हुआ? क्या हुआ?
बुढ़ियाः इस रंडी ने मुझे मार खिलवाई है।
बेगमः फिर इनका नाम लिए जाती है?
बड़ी बेगमः आख़िर तुम इस मुई चुड़ैल के मुँह क्यों लगी?
बेगमः आपकी क़सम अम्माजान, मैंने इसे कुछ नहीं कहा। यह ख़ुद जैसे खुर्री खाट पर सोकर आई थी। कितनी बातें बेचारी को सुना डालीं।
बड़ी बेगमः उई बेटा, तुमने तो इस निगोड़ी को ख़्वामख़्वाह पीटा, और वह भी इस बाज़ारू औरत के लिए।
बुढ़ियाः अरे वही तो मैं कह रही थी, कि इन मुई रंडियों का कोई एतबार नहीं है। अभी इनकी तो परछाईं से भी बचाओ।
(उमराव जाने लगती है। दरवाज़े पर नवाब मिल जाते हैं।)
नवाबः उमराव।
उमरावः मिलना है तो कोठे पर तशरीफ़ लाइए।
नवाबः लेकिन...तुम तो जानती हो कि हम वहाँ नहीं आ सकते।
उमरावः और हम यहाँ नहीं आ सकते हैं।
****
(ख़ानम बिस्मिल्ला के साथ तख़्त पर बैठी हैं। जौहरी आता है।)
जौहरीः तसलीम खानम साहिबा।
ख़ानमः आइए, आइए पन्नामल जी, दो दिन का कहकर गए थे, पंद्रह दिन का ग़ोता लगा दिया।
जौहरीः आपने सुना नहीं?
ख़ानमः क्या?
जौहरीः हम बरबाद हो गए। हमारे घर चोरी हो गई। पुश्तों का असासा[33] उठ गया।
ख़ानमः कितने का माल चोरी हो गया?
जौहरीः सब कुछ तो लुट गया। अब क्या रहा? दो लाख के ज़ेवरात ले गये।
ख़ानमः क्या हमारा ज़ेवर भी चोरी हो गया?
जौहरीः जी नहीं, भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि आपके ज़ेवरात दुकान पर थे। इसलिए बच गए।

---

[33]assets

ख़ानमः शुक्र है। आजकल शहरों में बहुत चोरियाँ हो रही हैं। *(हुक़्क़ा गुड़गुड़ाती हैं।)* नवाब मलिकाए-आलम के यहाँ हुई। लाला हरप्रसाद के यहाँ हुई। अब आप के यहाँ भी हो गयी।

जौहरीः अंधेर है। मिरज़ा कोतवाल बेचारे हैरान हैं। शहर के सब चोर तलब हो गये थे। वे लोग कानों पर हाथ रखते हैं कि हमारा काम नहीं। अब सुना है, कोई फ़ैज़अली डकैत है जो बाहर से आया है।

औरतः बीवी, एक बेगम साहिबा मिलने आई हैं आपसे।

ख़ानमः बेगम साहब?

औरतः जी।

ख़ानमः बुलाओ, बुलाओ।

औरतः जी।

ख़ानमः बड़ी बी, ज़रा परदा।

बड़ी बीः जी अच्छा।

ख़ानमः पन्नामल जी, बच्चो, इन्हें अपने कमरे में ले जाओ।

बिस्मिल्लाः जी।

जौहरीः जी, मैं इनके साथ? इनके कमरे में? मौक़ा अच्छा है।

औरतः तशरीफ़ लाइए।

ख़ानमः आदाब।

बेगमः तसलीम है।

ख़ानमः आइए, आइए। तशरीफ़ लाइए। बैठिए। कहाँ से आई हैं आप?

बेगमः क्या बताऊँ? यहाँ और तो कोई नहीं है? *(पार्श्व में गाना)*

ख़ानमः यहाँ कौन है? आप, मैं ...और ये लोग।

बेगमः मेरा नाम नवाब फ़ख़रुन्निसा बेगम है।

ख़ानमः छब्बन साहब की वालिदा?

बेगमः आप बिस्मिल्ला जान की अम्मा हैं न?

ख़ानमः जी हाँ, कहिए।

बेगमः छब्बन हमारे इकलौता लड़का है। बड़ी नाज़ों से पाला है। उसकी मंगेतर उसके चचा की लड़की है। लड़की पे (पर) गाली चढ़ चुकी है। लेकिन छब्बन शादी के लिए राज़ी नहीं है। इसी वजह से ग़ुस्से में चचा ने उसे जायदाद से अलहदा कर दिया है। आप हम पर इतना एहसान कीजिए। छब्बन को शादी के लिए राज़ी कर दीजिए। तुम्हारी लड़की का उम्र भर का घर है। जो तनख़्वाह नवाब छब्बन उसे देता था, उससे दस ऊपर ले लीजिए। लेकिन कुछ ऐसा कीजिए कि यह घर तबाह होने से बच जाए।

ख़ानमः मैं तो आपकी लौंडी हूँ। ख़ुदा ने चाहा तो वही होगा जो आपने इरशाद फ़रमाया।

बेगमः मगर नवाब छब्बन को इसकी ख़बर नहीं होनी चाहिए।

ख़ानमः क्या मजाल। *(बेगम की दी हुई थैली पकड़ते हुए)* इसकी क्या ज़रूरत थी? हम तो आपके पुराने नमकख़्वार हैं।

बेगमः अच्छा। अब इजाज़त दीजिए।
ख़ानमः अच्छा।
बेगमः ख़ुदा हाफ़िज़।
ख़ानमः आदाब।
****
(बिस्मिल्ला तख़्त पर बैठी है और नवाब छब्बन ज़मीन पर। ख़ानम आती हैं।)
ख़ानमः हुज़ूर का मिज़ाज कैसा है?
नवाब छब्बनः अल-हम-दुलिल्लाह।
ख़ानमः ख़ुदा ख़ुश रखे। हम तो दुआ-गो हैं। हज़ार बार जाएँ, मग़र फिर भी वही टके की मालज़ादी रहेंगे, आपके हाथ के देखने वाले। इस वक़्त एक अर्ज़ लेकर हाज़िर हुई हूँ। इजाज़त है, अर्ज़ करूँ?
नवाब छब्बनः फ़रमाइए।
ख़ानमः बड़ी बी!
बड़ी बीः जी, यह लीजिए।
ख़ानमः यह दुशाला कल बिकने के लिए आया है। सौदागर दो हज़ार माँग रहा है। मेरी निगाह में ...सत्रह-अठारह सौ में महँगा नहीं है। हुज़ूर परवरिश कर दें तो आपकी बदौलत इस बुढ़ापे में दुशाला तो ओढ़ लूँ।
बिस्मिल्लाः अम्मा!
ख़ानमः ठहर लड़की। तू हमारे बीच में न बोलना। तू तो आए दिन फ़रमाइशें किया करती है। आज एक हमारी भी सही। उई नवाब साहब, सख़ी से सूम भला जो जल्दी दे जवाब। कुछ तो इरशाद फ़रमाइए। हाँ न सही, ना सही?
नवाब छब्बनः ख़ानम साहिबा, इस दुशाले की तो कोई औक़ात ही नहीं। मगर शायद आप ...हमारे हालात से वाक़िफ़ नहीं।
ख़ानमः क्यों मियाँ, ख़ैर तो है?
नवाब छब्बनः अब हम इस क़ाबिल ही नहीं रहे कि आपकी फ़रमाइशों को पूरा कर सकें।
ख़ानमः हाय तकदीर! अब हम इस लायक़ हो गए कि ऐसे-ऐसे रईस एक ज़रा से चीथड़े के लिए हमसे मुँह छुपाते हैं।
नवाब छब्बनः हम सच कहते हैं ख़ानम साहब, अब हमारी माली हालत...।
ख़ानमः ख़ैर मियाँ, इस लायक़ नहीं रहे तो लौंडी के मकान पर आना क्या फ़र्ज़ था? हुज़ूर को मालूम नहीं कि बेस्वाएँ चार पैसे की मीत होती हैं? हम मुरव्वत करें तो खाएँ क्या? यूँ आपका घर है, आप आइए, मैं मना नहीं करती, मगर आप को अपनी इज़्ज़त का ख़ुद ख़याल चाहिए।
नवाब छब्बनः वाक़ई मुझसे बड़ी ग़लती हुई। आइन्दा कभी न आऊँगा।
बिस्मिल्लाः तुम तो बिलकुल ख़फ़ा हो गए हो। मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी।
नवाब छब्बनः क्यों? क्या अपनी अम्माजान से अभी और बेइज़्ज़त करवाना बाक़ी है?

(नवाब छब्बन ग़ुस्से में चले जाते हैं। बिस्मिल्ला रोने लगती है। उमराव ऊपर छज्जे की खिड़की से "नवाब साहब, नवाब साहब!" पुकारती है, मगर वे उसकी बात नहीं सुनते। इसी समय फ़ैज़अली नामक डाकू घोड़े पर चढ़कर वहाँ से गुज़र रहा होता है और उमराव को ग़ौर से देखने लगता है।)

****

(उमराव शेर लिख रही है:)

कितने तूफ़ाँ उठाए आँखों ने
नाव यादों की डूबती ही नहीं
तुझसे मिलने की, तुझको पाने की
कोई तदबीर सूझती ही नहीं।

बिस्मिल्लाः क्या लिख रही हो? नवाब सुलतान के नाम मुहब्बतनामा?

उमरावः क्या मैं कुछ और नहीं लिख सकती?

बिस्मिल्लाः तुम्हें कुछ और लिखने का होश ही कहाँ है? सुलतान के लिए जोगन जो बनी हो। मुझे तो डर है, किसी दिन उनके दरवाज़े जा बैठीं तो क्या होगा?

उमरावः बहुत चहक रही हो। लगता है, नवाब छब्बन साहब का ग़म कुछ कम हो गया है।

बिस्मिल्लाः उनका ज़िक्र न करो। जब भी उनका नाम आता है, मुझे दुनिया से नफ़रत होने लगती है। ख़ास तौर से अम्मा से।

उमरावः क्यों? ख़ानम साहब ने क्या किया?

बिस्मिल्लाः छब्बन साहब की मौत की ज़िम्मेदार वही हैं। न वो (वे) उस दिन आग लगाती, न वो (वे) मरते।

उमरावः भई बिस्मिल्ला। तुम तो बिलकुल ही बदल गईं। क्या तो कहा करती थीं कि रंडी की इज़्ज़त कोठे पर होती है। एक बार उतरी कि गई। या अब यह हाल है।

बिस्मिल्लाः छब्बन साहब के बाद मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता उमराव। जी चाहता है, कोई मुझे मिल जाए और मैं हाथ पकड़कर बैठ जाऊँ।

उमरावः लो, तुम्हारा भी जवाब नहीं। यह भी कहती जाती हो, और मुझ पर ऐतराज़ भी करती हो।

बिस्मिल्लाः भई, उमराव, अब छब्बन साहब और नवाब सुलतान का मुक़ाबला मत करो। छब्बन में जान दे देने की हिम्मत थी। सुलतान में इतनी हिम्मत भी नहीं कि वो (वे) तुमसे आकर मिल सकें।

उमरावः वो (वे) तो बहुत चाहते हैं, मैं ही नहीं मिलती।

बिस्मिल्लाः ए, बस रहने दो। जब धोखा खाओगी, तब मैं पूछूँगी।

(चली जाती है। उमराव सोच में डूब जाती है।)

****

मिरज़ाः अमाँ उमराव, तुम्हारे लिए गौहर मिरज़ा के पाँव और ज़ुबान दोनों घिस गए।

उमरावः हाय अल्लाह, मैंने क्या किया?

मिरज़ाः किया तो सब कुछ मैंने ही है। अईऽऽऽ। नवाब सुलतान की हवेली के चक्कर लगा-लगाकर पाँव टूट गए। वे हज़रत अपनी बीमार अम्माजान की चारपाई पकड़े बैठे थे। बड़ी मुश्किल से जब उनसे मुलाकात हुई तो तुम्हारी बेताबी और मुहब्बत के क़िस्से सुना-सुनाकर ज़ुबान घिस गई। हाय, क्या-क्या न तेरे इश्क़ ने इस दिल में किया है।
उमरावः क्या कहा नवाब साहब ने?
मिरज़ाः हाँ, ...वह ...क्या कहते हैं, "ज़िक्र इस सब्ज़ परी का और फिर बयाँ अपना।"[34] तड़प गए। गिड़गिड़ाने लगे कि किसी सूरत उमराव जान से एक बार मुलाक़ात करवा दीजिए।
उमरावः नवाब बन्ने साहब के यहाँ जाकर तो मैं हरगिज़ नहीं मिलूँगी।
मिरज़ाः अमाँ, वे तुमसे मूसा बाग़ में मिलने आएँगे।
उमरावः मूसा बाग़ में?
मिरज़ाः हम्म्म।
उमरावः मगर वह तो शहर के बाहर है। ख़ानम इतनी दूर जाने देंगी?
मिरज़ाः *(हँसते हुए)* अगर पाँच रुपए का आसरा हो जाए...एक पाँच रुपए का आसरा हो जाए, तो इसकी तरकीब भी गौहर मिरज़ा निकाल ही देंगे।
उमरावः दूँगी, दूँगी। बताओ।
मिरज़ाः ख़ानम साहबा तुम्हें ख़ुद लेकर जाएँगी।
उमरावः लेकिन...
मिरज़ाः बस, देखती जाओ।
****

(कोठे के सब लोग बग्घियों में बैठकर शहर के बाहर पिकनिक [वनभोज] करने जाते हैं।)

ख़ानमः ए ज़ाफ़रान लाईं?
हुसैनीः हाय अल्लाह, मैं तो बिलकुल ही भूल गई।
ख़ानमः ख़ुदा की मार, अब बिरयानी में क्या डालूँगी? ख़ाक?
हुसैनीः *(मौलवी साहब की ओर इशारा करके)* इनकी आफ़त में भूल गई। हमारा किमाम न भूलिए, हमारा पान न भूलिए, हमारा हुक़्क़ा न भूलिए।
मौलवीः अरे इक्का खड़ा है। अभी ले आते हैं।
हुसैनीः सुबह के गए, शाम को आओगे। मुझे मालूम ही था...
मिरज़ाः अरे सुनिए।
ख़ानमः निगोड़मारा, जनम का भूखा मालूम होता है। हट वहाँ से।
मिरज़ाः अरे, जल्दी कीजिए।
आदमीः बस, अभी लीजिए।
मिरज़ाः (गाने लगता है) "ए, ए गौहर मिरज़ा तो मर गए भूखे...."

---

[34] a line which is obviously adapted from Ghalib's well-known verse-
ज़िक्र उस परीवश का, और फिर बयाँ अपना।
बन गया रक़ीब आख़िर था जो रज़दाँ अपना॥

बिस्मिल्लाः ऐसे मुरदे हमने बहुत ज़िन्दा किए हैं।
(वह मिरज़ा के ऊपर लोटा-भर पानी फेंकती है। सब हँसने लगते हैं।)
****
(उमराव और नवाब सुलतान बाग़ में मिलते हैं।)
उमरावः आप से इतने दिन नहीं मिली तो बहुत बुरे-बुरे ख़्याल आते रहे।
नवाब सुलतानः *(गाते हैं)*

गज़ल

ज़िन्दगी जब भी तेरे बज़्म[35] में लाती है हमें।
यह ज़मीं चाँद से बेहतर नज़र आती है हमें।
सुर्ख़ फूलों से महक उठती हैं दिल की राहें।
दिन ढले यों तेरी आवाज़ बुलाती है हमें।
याद तेरी कभी दस्तक कभी सरगोशी[36] से।
रात के पिछले पहर रोज़ जगाती है हमें।
हर मुलाक़ात का अंजाम जुदाई क्यों है?
अब तो हर वक़्त यही बात सताती है हमें।

****
(मिरज़ा और बिस्मिल्ला दोनों घूमने निकलते हैं। मिरज़ा "सुनो" कहकर बिस्मिल्ला के कान में कुछ फुसफुसाता है। उस बात पर बिस्मिल्ला को हँसी आती है। झाड़ियों में छुपे हुए दो-तीन डाकू उन दोनों को देखते रहते हैं।)
मिरज़ाः यह लो गुलाब।
बिस्मिल्लाः *(हँसती हुई)* हम्म्म।
मिरज़ाः बिस्मिल्ला, उमराव तो नवाब सुलतान के लिए जान देती है। और हमारा कोई नहीं है।
बिस्मिल्लाः अच्छा, तो आशिक़ी बघारने का इरादा है?
मिरज़ाः तो...अकेले में और क्या करें? हैं?।
बिस्मिल्लाः तो यही बात है...।
मिरज़ाः क्या राय है?
बिस्मिल्लाः अम्मा!
(अचानक झाड़ियों से कूद कर डाकू बिस्मिल्ला को उठाकर भाग जाते हैं।)
मिरज़ाः बचाओ! बचाओ! अम्मा, बिस्मिल्ला को डाकू उठाकर ले गए हैं।
ख़ानमः छोड़ दो, छोड़ दो....।
बिस्मिल्लाः बचाओ! अम्मा...।
ख़ानमः मेरी बच्ची को ले गए वे। *(रोने लगती है।)*
(सब कोठे पर वापस लौटते हैं। बैठे-बैठे सब रोने लगते हैं।)
हुसैनीः हाय! लाश ही मिल जाती तो रो-धो कर सब्र कर लेते।
****

---

[35] assembly, company.
[36] whispering.

(बड़े नवाब अपनी पहली बीवी के घर जाते हैं। बेगम अंदर लेटी हैं। एक नौकरानी दौड़ती आती है। यह रामदेई है।)

रामदेईः बेगम साहिबा, नवाब साहब बाहर बैठे हैं। *(बेगम को चारपाई से उठाती है।)* आइए।

बेगमः क्या नवाब साहब आए हैं? बेटी, ज़रा दुलाई दे दे।

(नवाब बेगम से बात कर रहे हैं जो परदे के पीछे बैठी हैं। परदे के पीछे से ही बड़े नवाब को पानदान दिया जाता है।)

बड़े नवाबः आदाब। हम यहाँ इस वक़्त इसलिए आए थे कि हमारे छोटे भाई की बेटी फ़ातमा, अल्लाह रखें, अब जवान हो चुकी है। और यह तो आप जानती ही हैं कि हमारी भतीजी बचपन ही से .... सुलतान के लिए मँगी हुई है। और अब हम यह चाहते हैं कि जहाँ तक हो सके... जल्दी ही...

बेगमः *(परदे के पीछे से)* मगर हम तो पहले ही कहलवा चुके हैं कि आपकी भतीजी से सुलतान का रिश्ता हमें मंज़ूर नहीं है। और फिर यह रिश्ता तो उस वक़्त हुआ था, जब हमारी-आपकी तलाक नहीं हुई थी। आपकी ज़ात से हमें ऐसी-ऐसी तकलीफ़ें पहुँची हैं, बस मौला ही जानते हैं। हैरत है, पन्द्रह बरस बाद आज आप हमारी ख़ैर-सल्लाह लेने आए कैसे हैं? *(सुलतान परदे की दूसरी ओर से झाँकते हैं।)*

बड़े नवाबः लेकिन कम-से-कम सुलतान से पूछकर...

बेगमः सुलतान से? उससे क्या पूछना? उसके अच्छे-बुरे का ख़्याल मुझ से बढ़कर और किसको होता है? न मालूम किन-किन मन्नतों-मुरादों से उसको पाला है। किस शान से उसकी परवरिश की है मैंने। और फिर नवाब साहब, उसकी परवरिश के लिए मैं आपकी एक कौड़ी की भी एहसानमन्द नहीं हूँ।

बड़े नवाबः लेकिन बेगम, हम तो सिर्फ़ सुलतान की बेहतरी के लिए इस रिश्ते पर ज़ोर दे रहे हैं। आपको शायद मालूम नहीं, सुलतान बहक रहे हैं। आपसे अब क्या कहूँ? सुलतान कोठों पर जाने लगे हैं।

बेगमः ख़बरदार जो मेरे बच्चे पर इलज़ाम लगाया। सुलतान की बेहतरी का ख़्याल आपको अब आया है? अब तक कहाँ थे? यह क्यों नहीं कहते कि, अल्लाह रखे, फ़ातमा जवान हो गई है, इसलिए यहाँ आए हैं। ज़रा अपने गरेबान[37] में तो मुँह डालकर देखिए। आपने उस कलमुँही ख़ानम जान के पीछे हमारा घर उजाड़ दिया। और अब भी उस ही के कोठे पर पड़े रहते हैं।

बड़े नवाबः कोठों पर जाना ...तो रईसों की वज़ादारी है।

बेगमः उई अल्लाह! अरे, बाप जाए तो रईसों की वज़ादारी है। और बेटा जाए तो बहक रहा है। बहुत ख़ूब! बहुत ख़ूब! अरे आपके ख़ानदान में तो शादी करने से अच्छा है कि कोठों पर पड़ा रहे।

बड़े नवाबः ओफ़ हो। आपसे तो बहस करना बेकार है। सुलतान हमारा इकलौता बेटा है। उसकी शादी का फ़ैसला हम करेंगे। हम तारीख़ मुक़र्रर किये देते हैं। देखें, आप क्या कर लेती हैं।

---

[37] collar.

बेगमः ए, जाइए। मेरा बच्चा कभी मेरा दिल नहीं दुखाएगा। वह मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़ कोई क़दम नहीं उठा सकता। वह ऐसा नहीं है। मेरी इस हालत में अब मुझे और तकलीफ़ें न दीजिए। लिल्लाह, आप यहाँ से चले जाइए। या वल्लाह!
(बड़े नवाब चले जाते हैं।)
बेगमः या मौला। या ... अरे कोई अच्छी लड़की मिल जाती तो हम सुलतान का निकाह फ़ौरन पढ़वा देते। फिर देखते नवाब साहब क्या करते हैं। अरे कुछ नहीं कर सकते ये। सुलतान मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़ कहीं शादी नहीं करेगा। या मौला, या मौला। *(कराहती है। रामदेई उनकी मदद करती है और रज़ाई ओढ़ाती है।)*
बेटी, आ मेरे पास बैठ जा।
(बेगम मन ही मन सोचती हैं कि क्यों न सुलतान का निकाह इसी से पढ़वा दूँ।)
बेगमः बेटी...। मौला, मदद कीजिए।
****

(नवाब और उमराव नदी के किनारे मिलते हैं।)
नवाबः इतनी देर में आई हो?
उमरावः जब से बिस्मिल्ला गई है, ख़ानम तनहा घर से निकलने नहीं देतीं। बड़ी मुश्किल से आई हूँ। आप परेशान लगते हैं। शायद मैं इस क़ाबिल नहीं कि आपकी परेशानी जान सकूँ।
नवाबः हमारी परेशानी लफ़्ज़ों में बयान नहीं हो सकती।
उमरावः कुछ तो कहिए। दिल ही हलका हो जाएगा।
नवाबः अब क्या कहें उमराव?
उमरावः आप को आज तक न समझ पाई। कभी तो लगता है, मेरे आपके बीच कोई दूरी नहीं। और कभी लगता है, मैं आपकी दुनिया में ख़ास हद से आगे नहीं बढ़ सकती।
नवाबः ऐसा क्यों सोचती हो? हमने कभी तुम्हें अपने से अलग नहीं समझा।
उमरावः तो फिर बात क्यों छुपा रहे?
नवाबः अब्बाजान ने कभी हमारी ख़बर नहीं ली। अब अचानक हमारे पीछे पड़ गए कि हम उनकी भतीजी से शादी कर लें।
उमरावः तो कर लीजिए न शादी। आपके लिए हमें सौत भी मंज़ूर है।
नवाबः अम्माजान इसके सख़्त ख़िलाफ़ हैं। वे नहीं चाहतीं हम अब्बा या उनके ख़ानदान वालों से कोई रिश्ता रखें। कुछ समझ में नहीं आता, क्या करें?
उमरावः जो बेगम साहब कहें, वही कीजिए। आप पर उनका ज़्यादा हक़ है। हम से तो फिर भी साहब-सलामत रहेगी।
नवाबः शायद ...अम्माजान को यह भी मंज़ूर न हो ...
(उमराव आँसू-भरी आँखों से देखती रह जाती है।)
****

गाना

न जिसकी शक्ल है कोई, न जिसका नाम है कोई।

इक ऐसी शह[38] का क्यों हमें, अज़ल [39] से इंतज़ार है?

(उमराव कहीं अंदर यह गाना गा रही होती है जब फ़ैज़अली नामक एक डाकू कोठे के अंदर घुस आता है।)

कोठे का दरबानः अरे सुनिए, ख़ानम साहब, यह...

डाकूः आदाब।

ख़ानमः आदाब, बैठिए।

(दरबान डाकू को उमराव के पास ले जाता है।)

डाकूः अच्छा गा लेती हो।

उमरावः आप?

डाकूः हाँ।

आदमीः ये आप ही से मिलना चाहते हैं। ख़ानम साहब से बात हो चुकी है।

(डाकू आदमी को पैसा देकर "जाओ" *कहता है।)*

आदमीः आदाब।

डाकूः कुछ महीने पहले जब यहाँ से गुज़र रहा था तब तुम्हें देखा था। और आने का इरादा भी किया। मगर कुछ सोच कर रह गया। और फिर तुम्हारा... वह मुहर्रम में चालीस दिन कोठा भी तो बंद रहा। भई, मैं अपने गाँव चला गया। कुछ काम था। वैसे तुम्हारे बारे में सोचता रहा। एक, कि तुम्हारा रहन-सहन कैसा होगा? तुम्हारी आवाज़ कैसी होगी? कुछ सोच रही हो क्या?

उमरावः हम्म्म? जी नहीं।

डाकूः *(हँसते हुए)* ओह, अच्छा। मुझे लगा...।

(डाकू अपनी अंगूठी उतारकर उमराव को देता है।)

डाकूः यह तोहफ़ा है। रख लो।

(वह उमराव को अंगूठी पहनाकर उसके हाथ में एक पैसे की थैली थमा देता है।)

****

(उमराव वही अंगूठी मौलवी साहब को पहनाती है।)

मौलवीः अरे, यह तो हीरे की है। हमारे लिए लाई हो?

उमरावः आपको पसन्द नहीं आई?

मौलवीः पसन्द तो आई ... मगर ... क्या बहुत चाहता है तुम्हें वह?

उमरावः ऐसी चाहत का क्या भरोसा?

मौलवीः अरे तो भरोसा ही बढ़कर चाहत बन जाता है। अब हमें ही देखो। एक हुस्ना के भरोसे उम्र काट दी इस डयोढ़ी पे (पर)।

उमरावः आपकी बात और है, मौलवी साहब।

मौलवीः नहीं बेटी, एक ही बात है। या तो किसी को अपना कर लो, या किसी के हो लो।

उमरावः कोशिश तो की थी।

---

[38]urge, incitement.

[39]eternity.

उमरावः कोशिश तो की थी।
मौलवीः फिर करो। तुम कोठे की चीज़ नहीं, उमराव। तुम्हारे लिए तो दुनिया पड़ी है। *(उमराव उनका हाथ चूमती है।)*
****
(उमराव तानपूरा बजा रही है। फ़ैज़अली आता है।)
डाकूः *(बोतल खोलता है)* पीती हो?
उमरावः जी? जी नहीं।
डाकूः हाँ! *(हँसने लगता है।)* हाँ, अच्छा है। मैं कुछ दिनों के लिए अपने घर जा रहा हूँ।
उमरावः कहाँ?
डाकूः फ़रुख़ाबाद। तुम चलोगी?
उमरावः ख़ानम किसी के साथ लखनऊ से बाहर नहीं जाने देतीं।
डाकूः तो मैं क्या कोई ऐसा-वैसा आदमी हूँ क्या? मेरी रियासत है वहाँ। हाँ, दो महीने की तनख़्वाह पेशगी देने को तैयार हूँ।
उमरावः ज़रा ख़ानम से पूछ लूँ नवाब साहब।
डाकूः हाँ? नवाऽऽऽब साऽऽहब? *(हँसता है।)* मैं....?
उमरावः फिर क्या पुकारूँ आपको?
डाकूः कहो। नवाब साहब ही कहो। अच्छा लगता है।
****
(नवाब सुलतान कोठे पर आते हैं। डाकू बाहर जाता है। उमराव तानपूरा बजा रही है।)
नवाबः उमराव, हम दावत देने आये हैं। कल... हमारी शादी है।
हुसैनीः ख़ुदा मुबारक करे सरकार। दुल्हन का बोलबाला। मैं सदक़े। माँझे का जोड़ा क्या फब रहा है।
(उमराव फूट-फूट कर रोने लगती है और नवाब सुलतान के कपड़ों को फाड़ती है। वे चले जाते हैं।)
हुसैनीः ज़माने की चाहत पर झाड़ू फिरे। माँझे का जोड़ा तो हमने भी फाड़ा था बीवी। यही देख लो।
डाकूः यह लौंडा कौन था? तुम कहो तो हाथ-पैर बाँध कर डाल दूँ तुम्हारे सामने। क्यों आँखें फोड़ रही हो इनके लिए? ये सब-के-सब ऐसे ही होते हैं। चौक में ऐंठते फिरते हैं, ख़बीस। चूहे का बच्चा सामने आए तो घिग्घी बँध जाती है। फ़िरंगी ने इस नामाक़ूल बादशाह को निकम्मा बना कर रख दिया है। जा! सब-के-सब ऐयाशियों में डूबे हुए हैं। अहमक़। तुम देख लेना, थोड़े ही दिनों में यहाँ फ़िरंगी घुसकर बैठ जाएँगे। बस! सारी की सारी नवाबी धरी की धरी रह जाएगी।
उमरावः अल्लाह!
डाकूः क्या हुआ?
उमरावः सर दुख रहा है।

डाकूः दबा दूँ? म-मेरे साथ चलो न। खुली हवा में रहोगी, न तो कभी सर में दर्द होगा, न ही...। मगर क्या करें? तुम्हारी मरज़ी के ख़िलाफ़ तुम्हें ले जा नहीं सकता। कोई दूसरी औरत होती तो...।

****

हुसैनीः मति मारी गई है, मुण्डी काटे की। दो महीने तो क्या, दो बरस की तनख़्वाह दें, तो भी आप मंज़ूर न करना। कलमुँहे की शकल पर फिटकार बरसती है। चौक वालियों को पतुरिया समझता है? मैं तो कहूँ ख़ानम साहब, अब की आए तो डेढ़ सौ रुपये उसके मुँह पर मारना और कहना, 'हवा खाओ मियाँ, हवा।" *(ख़ानम पीकदान में पान की पीक थूकती हैं।)* साला उस दिन कह रहा था मुझे, "ए बुढ़िया...! हम्म्म।

मिरज़ाः ये रहे पाँच सौ रुपये। उमराव के मुजरे का बयाना। सीतापुर के राव साहब ने भेजे हैं।

उमरावः मैं नहीं जाऊँगी। रुपये फेर दो।

हुसैनीः हाय! ख़ानम साहब रुपये ले कर कभी नहीं फेरतीं।

उमरावः मेरे सर में दर्द है बुआ।

हुसैनीः ए हे, वह तो शाम ठीक हो जाएगा। मैंने पढ़ कर फूँक दिया है। मुजरा कब है?

मिरज़ाः कल। सुबह ही निकलना पड़ेगा।

उमरावः मैं सीतापुर नहीं जाऊँगी।

हुसैनीः ए हे, यूँ टका-सा जवाब न दो बेटी। ख़ानम बुरा मान जाएँगी।

उमरावः चाहे कोई मरे या जिए, आपको तो मुजरे से मतलब।

मिरज़ाः क्या तुम्हें मुजरों से कुछ नहीं मिलता?

उमरावः लिल्लाह, मुझे दिक़ न करो। मेरा सर फटा जा रहा है।

हुसैनीः यह तुझे क्या हो गया है? पहले तो उस मुण्डीकाटे से मिलने को राज़ी न थी। फिर उसी के साथ फ़रुख़ाबाद जाने के लिए भी तैयार हो गयी। रोक दिया तो मुजरा नहीं करोगी। सर दुख रहा है?

उमरावः यह तो ज़बरदस्ती है।

हुसैनीः ए हे, ज़बरदस्ती काहे की? घोड़ा घास से यारी करे तो खाएगा क्या? मुजरा तो तुझे करना ही पड़ेगा। हम्म्म।

****

(उमराव डाकू के पास जाती है।)

उमरावः मैं आपके साथ चलूँगी।

डाकूः हाँ? मेरे साथ चलोगी?

उमरावः हाँ। कोई जाने दे या न जाने दे, मैं ज़रूर चलूँगी।

डाकूः छुप कर?

उमरावः कुछ भी करके मुझे यहाँ से ले चलिए। अब मेरा यहाँ दम घुटता है।

(दोनों वहाँ से चले जाते हैं। दोनों एक घोड़े पर सवार होकर वन से गुज़र रहे हैं।)

डाकूः सर का दर्द कम हुआ?

उमरावः हाँ। कानपुर कब तक पहुँचेंगे?
डाकूः थक गईं क्या?
उमरावः पहली बार घोड़े पर बैठी हूँ न।
डाकूः आओ, थोड़ा सुस्ता लेते हैं।
उमरावः हम्म्म।
(डाकू घोड़े से उतरकर उमराव की उतरने में मदद करता है।)
डाकूः आओ, सँभाल कर। मुझे यक़ीन नहीं था कि तुम... मेरे साथ चली आओगी।
उमरावः लखनऊ में मेरा जीना मुश्किल था। और पता नहीं, मेरे दिल ने आपके साथ आने पर क्यों मज़बूर कर दिया।
डाकूः तुम्हें मालूम है, मैं कौन हूँ?
उमरावः उहूँ। अब यह जानकर क्या करूँगी?
डाकूः तुम यहीं ठहरो। मैं पानी लेकर आता हूँ।
उमरावः हम्म्म।
(जब डाकू नदी से पानी भर रहा होता है तो कई सिपाही घोड़े दौड़ाते आते हैं। उनमें से एक चिल्लाता है, "वह रहा फ़ैज़अली डाकू।" फ़ैज़अली घोड़े पर चढ़कर भागता है। सिपाही उसका पीछा करने लगते हैं। भागते-भागते डाकू का सिर वृक्ष की डाल से टकरा जाता है जिससे वह घोड़े से गिर पड़ता है। वह झाड़ी में छुप जाता है, मगर उसका पीछा करने वाले उसके घोड़े को देखकर रुक जाते हैं।)
पहला सिपाहीः यह रहा उसका घोड़ा।
दूसरा सिपाहीः ज़रूर यहीं कहीं छुपा है।
पहला सिपाहीः तुम लोग उस तरफ़ देखो।
(ढूँढते-ढूँढते उनको डाकू दिखाई दे जाता है। लड़ाई शुरू हो जाती है। डाकू को गोली लगती है और वह बुरी तरह से घायल होकर उमराव के पास लौटता है। उमराव के करीब पहुँचते ही डाकू मर जाता है। उमराव चीखती है। सिपाही उमराव को अपने शिविर में ले चलते हैं जहाँ राजासाहब के सामने उसकी पेशी होती है।)
****
राजा साहबः फ़ैज़अली तुम्हारा कौन था? तुम्हारा फ़ैज़अली के साथ क्या रिश्ता था?
उमरावः कुछ नहीं।
राजा साहबः तुम्हें...भगाकर लाया था?
उमरावः जी नहीं।
राजा साहबः अपनी मरज़ी से उसके साथ थीं?
दूसरा आदमीः वह तो रंडी है सरकार।
राजा साहबः हम्म्म! क्या तुम्हें मालूम था कि फ़ैज़अली एक डाकू था?
उमरावः जी नहीं।
राजा साहबः लखनऊ की रहने वाली हो?

उमरावः जी।
राजा साहबः नाम क्या है तुम्हारा?
(परदे के पीछे से बिस्मिल्ला दौड़ती हुई आती है।)
बिस्मिल्लाः उमराव!
उमरावः बिस्मिल्ला, बिस्मिल्ला!
बिस्मिल्लाः उमराव? क्या तुम ही फ़ैज़अली के साथ थीं?
उमरावः हाँ।
राजा साहबः क्या ये वही उमराव जान हैं जिनका तुम ज़िक्र किया करती थीं?
बिस्मिल्लाः जी हाँ। अम्मा कैसी हैं? लखनऊ कब छोड़ा? खड़ी क्यों हो? बैठो न?
उमरावः लखनऊ में तो सब समझते हैं कि ख़ुदा न ख़्वास्ता, तुम...।
बिस्मिल्लाः कई बार इरादा हुआ कि ख़त लिखूँ। लेकिन अम्मा के डर से हिम्मत नहीं हुई। वे आकर फ़ौरन मुझे ले जाएँगी।
उमरावः राजा साहब अच्छे आदमी हैं?
बिस्मिल्लाः बहुत। मुझे तो उसी दिन डाकू ठिकाने लगा चुके होते। ख़ुदा राजा साहब को सलामत रखे। सब डकैतों को पकड़ लिया। तब से उन्हीं के साथ हूँ।
उमरावः ख़ुश हो?
बिस्मिल्लाः रानी बनी बैठी हूँ। ऐश करती हूँ। तुम फ़ैज़अली के साथ कहाँ जा रही थीं?
उमरावः कानपुर।
बिस्मिल्लाः अब कहाँ जाओगी? वापस लखनऊ?
उमरावः मंज़िल का पता होता तो यूँ भटकती न फिरती।
बिस्मिल्लाः फिर भी?
उमरावः बिस्मिल्ला, मुझे ...मुझे कानपुर पहुँचवा सकती हो?
बिस्मिल्लाः *(उमराव के गाल सहलाते हुए)* मेरी उमराव!

गाना

जब भी मिलती है हाँ मुझे अजनबी लगती क्यों है?
ज़िन्दगी रोज़ नए रंग बदलती क्यों है?

****

(बाक़ी गाना उमराव महफ़िल में गा रही है।)
सब आदमीः वाह, वाह, सुबहान अल्लाह! सुबहान अल्लाह!
पहला आदमीः शारित मियाँ, जब से उमराव कानपुर आई हैं, महफ़िलों के रंग बदल गए हैं।
शारित मियाँः अरे, सुनने की बात है मियाँ! आप भी सुनिए उमराव जान। कल मैं लाठी-मुहाल से गुज़र रहा था। एक गाना हो रहा था। एक हुजूम जमा था। कान लगाकर सुनता हूँ तो, जानते हो मियाँ, उमराव जान की ग़ज़ल है।
सबः वाह, वाह, बहुत ख़ूब! वाह, वाह!
****
(उमराव बिस्तर पर लेटी गाना सुन रही है।)

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक।

(खिड़की के बाहर से आवाज़ें सुनाई देती हैं।)

बुढ़ियाः क्यों मियाँ, वह लखनऊ की गाने वाली यहीं रहती हैं?

आदमीः जी हाँ। इस ज़ीने से ऊपर चली जाइए।

उमरावः तसलीम।

बुढ़ियाः उमराव जान क्या तुम्हीं हो?

उमरावः जी हाँ।

बुढ़ियाः हमारी बेगम ने याद किया है। लड़के की साल-गिरह है। तुम्हारा मुजरा रखा है।

उमरावः बेगम साहब मुझको क्या जानें?

बुढ़ियाः वे भी तो लखनऊ की रहने वाली हैं।

उमरावः और आप भी तो लखनऊ की रहने वाली हैं।

बुढ़ियाः हाँ, तुमने कैसे जाना?

उमरावः कहीं बातचीत का क़रीना छुपा रहता है?

बुढ़ियाः ये पैसे रख लो। बाक़ी वहाँ हिसाब हो जाएगा।

उमरावः इस ख़्याल से कि बेगम साहब बुरा न मानें... रख लेती हूँ।

बुढ़ियाः अच्छा, हम चलते हैं।

उमरावः जी अच्छा।

****

(उमराव बेगम के बेटे की साल-गिरह पर आती है। औरतें मुबारक के गाने गा रही हैं।

उमराव बेगम के बेटे की न्योछावर लेती है। बेगम और उमराव एक-दूसरे को ग़ौर से देखती हैं।)

बेगमः ऐसा लगता है, मैंने आपको पहले कहीं देखा है।

उमरावः अजीब बात है। मैं भी यही कहने वाली थी।

बेगमः *(उमराव की ठुड्डी पर तिल देखकर बेगम को अमीरन की शक्ल याद आती है।)* कहीं तुम... अमीरन तो नहीं हो?

उमरावः आप...?

बेगमः मुझे पहचाना? मैं हूँ ...रामदेई।

गाना

किनसे बिछुड़े और कब किससे मिलाती हैं हमें।
ज़िन्दगी देखिए क्या रंग दिखाती है हमें।

रामदेईः अच्छा अमीरन, अगर उस दिन वे लोग तुम्हें मेरी जगह ले जाते तो?

उमरावः तो तुम्हें मिलता वह कोठा, और मुझे यह कोठी।

(बेगम हँसती है।)

उमरावः अच्छा, यह बताओ, नवाब साहब कहाँ हैं?

रामदेईः कलकत्ते गए हुए हैं, आजकल में आ जाएँगे। अब तुम अपनी सुनाओ।

उमरावः क्या करोगी सुनकर? ख़ुशी की महफ़िल है। अच्छी-अच्छी बातें करो। अच्छा, उसी ग़ज़ल का एक और शेर सुनो।

गर्दिशे-वक़्त[40] का कितना बड़ा एहसाँ है कि आज
यह ज़मीं चाँद से बेहतर नज़र आती है हमें।

(नवाब सुलतान कमरे में आते हैं। उमराव चौंक जाती है।)

रामदेईः उई, मैं तो भूल ही गई। नवाब साहब, ये उमराव जान हैं।

नवाबः आदाब।

औरतः उमराव जान साहिबा की सवारी लग गई है।

नवाबः क्या आप जा रही हैं?

उमरावः जी हाँ, इजाज़त चाहती हूँ।

नवाबः हम्म्म। अगर हम इजाज़त न दें तो?

उमरावः लौंडी हुक्म की बाँदी है।

(उमराव बेगम और नवाब सुलतान के सामने बैठकर गाती है)

गज़ल

जुस्तजू[41] जिसकी थी उसको तो न पाया हमने।
इस बहाने से मगर देख ली दुनिया हमने।

(गाते-गाते उमराव को नवाब के साथ बिताये दिनों की यादें आने लगती हैं।)

तुमको रुसवा न किया ख़ुद भी पशेमाँ[42] न हुए।
इश्क़ की रस्म को इस तरह निभाया हमने।
कब मिली थी कहाँ बिछुड़ी थी हमें याद नहीं।
ज़िन्दगी तुझको तो बस ख़्वाब में देखा हमने।
ए 'अदा' सुनाएँ भी तो क्या हाल अपना।
उम्र का लंबा सफ़र तय किया तनहा हमने।

****

(उमराव अपने घर लौटती है। वहाँ हुसैनी और मिरज़ा उसके इंतज़ार में बैठे हैं।)

हुसैनीः अल्लाह, बेटी, हाय! *(रोने लगती है।)* क्या सख़्त दिल कर लिया। किसी की मुहब्बत ही नहीं रही? तुम्हारे मौलवी साहब तो तुम्हें याद कर-करके तड़पते रहते हैं। कैसे-कैसे याद करते हैं। हाय!

(दोनों गले मिलती हैं। उमराव भी रोने लगती है।)

उमरावः ख़ानम कैसी हैं?

हुसैनीः बेटी के ग़म में आधी हो गयी थीं। अब तुम्हारे ग़म में तो ख़त्म ही हो गईं।

मिरज़ाः उमराव, हम तुम्हें लेने आये हैं। चलो।

---

[40]the turmoil of the times.
[41]search.
[42]regret.

(उमराव उनके साथ जाती है। कोठे पर पहुँचते ही वह ख़ानम से मिलने जाती है। ख़ानम ग़ज़ल सुन रही हैं। उमराव को देखकर वे ख़ान साहब को रुकने का इशारा करती हैं।)

ख़ानमः ख़ान साहब। उमराव तू कहाँ चली गयी थी बेटी?

उमरावः आप तो अच्छी-भली हैं।

ख़ानमः उई, मेरे दुश्मनों को क्या हुआ?

उमरावः बुआ ने तो कहा था, ख़ुदा न ख़्वास्ता...

हुसैनीः तो और क्या कहती बीबी? यह कोई इतनी आसानी से आने वाली थी? हम्म्म। पाला-पोसा हमने। जवान किया हमने। और कमाने लगी तो चूल्हा अलग कर लिया। क्या ख़ूब। दुख सहे बी फ़ाख़्ता और कौए अंडे खाएँ!

उमरावः अच्छा, तो इसी लिए आप मुझे यहाँ लायी थीं?

ख़ानमः ए हुसैनी, तुम तो बिलकुल ही सठिया गयी हो। महीनों बाद बच्ची घर में आयी, और तुम लगी ऊल-जलूल सुनाने। तुम दिल छोटा न करो बेटी। बुआ तो कुछ भी बक देती हैं।

उमरावः नहीं, मैं लखनऊ में नहीं रहूँगी।

ख़ानमः यह मुहर्रम हमारे साथ गुज़ार लो बेटा। फिर जहाँ जी चाहे, चली जाना। यहाँ आओ बेटा। यहाँ आओ मेरे पास। जाओ, अपने कमरे में आराम करो। जाओ।

(उमराव रोते हुए अपने कमरे की ओर जाती है। मिरज़ा ख़ानम के क़रीब बैठ जाता है।)

ख़ानमः यह अब यहाँ नहीं रहेगी।

मिरज़ाः घोड़ी दुलत्ती मारने लगी है।

ख़ानमः तो किसी थान पर बाँध देंगे।

****

(उमराव को मौलवी साहब मिल जाते हैं।)

मौलवी साहबः उमराव, तुम?

उमरावः आदाब।

मौलवी साहबः जियो बेटी। बेटी, ख़ुदा तुझे इल्म की दौलत दे बेटी।

****

(उमराव अकेली अपने कमरे में बैठी कुछ लिख रही है।)

मिरज़ाः उमराव, तबीयत ख़राब है? सर दबा दूँ?

उमरावः रहने दो। मेरे सर में दर्द नहीं है।

मिरज़ाः नहीं भी है तो क्या हुआ? हम्म्म?

उमरावः बड़ी मुहब्बत जतायी जा रही है। जेब ख़ाली है क्या?

मिरज़ाः अमाँ, छोड़ो। क्या ग़ैर-शायराना बातें करती हो। सच्चे आशिक़ के लिए महबूब की मीठी बात ही काफ़ी हैं। तुम चली जाओगी तो हमारा क्या होगा उमराव?

उमरावः वही जो पिछली बार हुआ।

मिरज़ाः हाय मुझे रोता सुना, लेकिन न इतना भी कहा उसने।
कि है यह शोर-सा कैसा, पस-ए-दीवार[43] रोने का।

उमरावः हम्म्म।

मिरज़ाः वह बुढ़िया तुम्हें इतनी आसानी से नहीं जाने देगी। और अगर तुम चली भी गईं तो वापस पकड़ लाई जाओगी। बस, एक तरकीब है। किसी से निकाह कर लो।

उमरावः अपना पैग़ाम लेकर आये हो?

मिरज़ाः सच... कह रहा हूँ। फ़ायदे में रहोगी। मुझसे शादी करके ख़ानम का ज़ोर तुम पर कम हो जाएगा।

उमरावः और शादी के बाद क्या होगा? मैं कमाऊँगी और आप खाएँगे। मुझे कुएँ से निकलकर खाई में नहीं गिरना है।

****

(कोई उमराव से मिलने आता है।)

आदमीः यही उमराव जान है।

दूसरा आदमीः आदाब अर्ज़ है।

उमरावः आदाब।

दूसरा आदमीः उमराव जान आप ही का नाम है?

उमरावः जी हाँ।

दूसरा आदमीः मैं अदालत का एक कारिन्दा हूँ। इस तक़ाज़े के मुताबिक़ गौहर मिरज़ा, वल्द-ए-जहाँदार मिरज़ा ने अदालत में यह दावा किया है कि उनकी मनकूहा[44] बीवी मुसम्मात[45] उमराव जान तलाक लिए बग़ैर किसी दूसरे शख़्स के साथ रहना चाहती हैं। अठारह तारीख़ को आपकी पेशी है। अदालत में हाज़िर हो जाइएगा। मुचलका[46] लिया जाएगा। यह रहा इत्तिला-नामा। आदाबअर्ज़।

(उमराव इस बात पर बिलकुल भौचक्की हो जाती है।)

****

मिरज़ाः यह हमारे निकाह-नामे की नक़ल है। बुआ और ख़ानम के अलावा दस-पंद्रह गवाह और हैं जो निकाह में शरीक हुए थे। तुम्हारी ज़िद ने बहुत पैसे ख़र्च करवा दिए। करना ही पड़ा। पेट-क़सम।

(उमराव मिरज़ा पर चाँटे जड़ने लगती है। साथ ही वह उसके कपड़े फाड़ती है और फूट-फूट कर रोती जाती है।)

उमरावः यह झूठ है। यह सब झूठ...झूठ है।

मिरज़ाः *(दिलासा देते हुए)* तुम्हारे सर की क़सम उमराव, इसमें मेरा कोई क़ुसूर नहीं है। और सच पूछो तो ख़ानम का भी क़ुसूर नहीं है। इस उम्र में वे और क्या कर

---

[43]behind the wall.
[44]married.
[45]named.
[46]bond, recognisance, undertaking.

सकती हैं? उस नई छोकरी के जवान होने तक क्या करें? हम सब क़िस्मत के मारे हैं उमराव।

उमरावः किस्मत के नहीं, हालात के। तुम यह मुक़दमा वापस नहीं ले सकते?

मिरज़ाः ख़ानम के टुकड़ों पर पलने वाला इतनी जुर्रत नहीं कर सकता।

उमरावः तुम कानपुर चले जाओ। मेरा मकान ख़ाली है।

मिरज़ाः और खाऊँगा क्या?

(उमराव संदूकची खोलकर उसको अपने सब गहने दे देती है।)

****

(अंग्रेज़ शहर पर हमला करते हैं। अव्यवस्था, लूट-मार और शोर-गुल फैला है। कोठे के सब लोग अपना-अपना सामान बाँध रहे हैं।)

हुसैनीः कमबख़्त गौहर मिरज़ा। हज़रत अब्बास का अलम टूटे। उसे भी इसी वक़्त जाना था? शहर में अंधेर मचा है। गोरे गली-गली घूम रहे हैं।

ख़ानमः या अल्लाह, मदद कीजिए। या मुश्किल कुशा मद्द फ़रमाइए[47]।

(उमराव ऊपर से झाँकती है। कोई चिल्लाने लगता है, "ख़ानम साहब, ख़ानम साहब, गोरे दरवाज़ा तोड़े डालते हैं। हम लोग दीवार फाँद कर निकल चलें। आइए मेरे साथ।")

ख़ानमः चलिए, चलिए। उमराव, जल्दी करो।

(सब वहाँ से भाग जाते हैं। शहर के सभी लोग क़ाफ़िला बना कर शहर से चले जाते हैं।)

(पार्श्व में गाना)

-- अलविदा ए बेकसो मजलूमो[48] केसर अलविदा बेसर ए .....

अलविदा ए...

****

गाड़ीवानः फ़ैज़ाबाद आ गया बीवी। बनारस जाने वाला क़ाफ़िला सवेरे जाएगा। रात यहीं कहीं काटनी होगी।

ख़ानमः यहाँ? इस वीराने में?

गाड़ीवानः क्या किया जाए? मज़बूरी है।

ख़ानमः हाय क़िस्मत!

(रात को जब सब सोये होते हैं तो उमराव चुपके से भाग जाती है। मौलवी साहब उसे जाते देखते हैं लेकिन कुछ नहीं कहते। उमराव फ़ैज़ाबाद में बसती है और उसका नाम फिर से दूर-दूर तक फैल जाता है।)

****

गाना

(उमराव महफ़िल में गाती है।)

न जिसकी शक्ल है कोई न जिसका नाम है कोई।

---

[47] invoking Hazrat Ali, who can solve all problems, to come to her rescue.

[48] wrongfully treated.

इस ऐसी शह का क्यों हमें अज़ल से इंतज़ार है।

सबः वाह, वाह! माशा अल्लाह! वाह, वाह!

आदमीः फ़ैज़ाबाद में आपके गाने से ज़्यादा आपकी शायरी की धाक बैठ गयी है।

दूसरा आदमीः बेशक।

उमरावः कुछ मुजरे भी आते रहें तो अच्छा है, मीर साहब।

दूसरा आदमीः बेशक।

उमरावः ख़ाली शायरी से पेट नहीं भरता।

तीसरा आदमीः अजी, हमारे मोहल्ले का मुजरा तो याद है न? परसों।

****

(उमराव उस आदमी की बुलायी जगह में जाती है। वहाँ गाना गाते समय बचपन में भाई के खेलने के दृश्य उसकी आँखों के सामने आने लगते हैं।)

गाना

ये क्या जगह है दोस्तो, यह कौन सा दयार है?
हद्दे-निग़ाह[49] तक जहाँ ग़ुबार ही ग़ुबार है।
यह किस मक़ाम[50] पर हयात[51] मुझको ले के आ गयी
न बस ख़ुशी पर है जहाँ न ग़म पर इख़्तियार है।
तमाम उम्र का हिसाब माँगती है ज़िन्दगी।
यह मेरा दिल कहे तो क्या कि ख़ुद से शर्मसार है।

(उमराव को बचपन में भाई के साथ खेल की याद आती है।)

बुला रहा है कौन मुझको चिलमनों[52] के उस तरफ़
मेरे लिए भी क्या कोई उदास बेकरार है?

(गाते-गाते उमराव घर के आँगन में चली जाती है। वहाँ उसे अपनी माँ मिलती है।)

माँः तुम ही लखनऊ से आयी हो?

उमरावः जी हाँ।

माँः तुम्हारा नाम क्या है?

उमरावः नाम जानकर क्या करिएगा?

माँः क्या तुम ज़ात की पतुरिया हो?

उमरावः जी नहीं, वक़्त ने बना दिया है।

माँः कुछ तो बताओ बेटी अपने बारे में ... कि तुम कौन हो।

उमरावः क्या बताऊँ? क्या बताऊँ ... कि मैं कौन हूँ?

माँः तुम्हारा असली घर कहाँ है?

---

[49]as far as the eye can see.
[50]stopping-place.
[51]life.
[52]hanging screen made from bamboo.

उमरावः असली वतन तो यहीं है जहाँ मैं खड़ी हूँ। *(माँ को उसकी मँगनी के दृश्य याद आने लगते हैं।)*

माँः क्या तुम...क्या तुम अमीरन हो? *(दोनों रोने लगती हैं।)* हाय, मेरी बच्ची, कहाँ गयी थीं तुम?

उमरावः भैया और अब्बा कहाँ हैं?

माँः अब्बा तो तेरे कब के सिधारे बिटिया। मेरी लाल, तू कहाँ चली गई थी? मेरी चंदा! ए मेरी लाल, माँ की नगरी उजाड़ कर ... कौन सी नगरी बसाई अमीरन?

(उमराव का भाई आता है।)

भाईः नहीं अम्मा, यह अमीरन नहीं। यह लखनऊ की मशहूर तवायफ़ उमराव जान है।

(अपने भाई को देखकर उमराव फिर से अपने बचपन की याद करने लगती है। गाय खाये चारा...आदि..)

उमरावः भैया!

भाईः बहुत घराने का नाम रौशन किया है।

उमरावः भैया!

भाईः हम तो समझे थे कि तुम मर गई हो। लेकिन तुम अभी तक ज़िन्दा हो! तुम्हें तो चुल्लू-भर पानी में डूब मरना चाहिए था। बेहतर हो अगर तुम यहाँ से चली जाओ।

उमराव की माँः अमीरन! *(रोने लगती है।)*

(उमराव दौड़कर वहाँ से चली जाती है।)

उमराव की माँः मेरी बच्ची!

भाईः अम्मा!

माँः नहीं, नहीं!

(अंत में उमराव अपने लखनऊ वाले कोठे में वापस आ जाती है।)